मैथिलीक नोसिदानी



लेखक—

श्री रेवती रमण झा "रमेण"

ग्राम पो०—पतोर (दरभंगा)

मूल्य—अमूल्य

कविता

गाना नं० १

ई मैथिलीक नोसिदानी सँ
मैथिलगण लय सुरकैत जाउ।
किछु भेल हो जौं त्रुटि तँ
जुनि नोसि के बिसरैत जाउ॥

ई चुनि चुनि तेजगर गात
मगही तम्बाकुल के बनल।
करु पान सरस रस गाबि-गाबि
दय छोटि मसाला तरण बनल॥

मिथिला जनक ललने लोकनि
जुनि मैथिली बिसरैत जाउ।
होस करू पुनि होस करू
पुनि-पुनि पिछरल ससरैत जाउ॥

बाल्मीकि तुलसी कवि जी जौं
नहि करितथिं लीखिकय विख्यात।
सीताराम विष्णु कृष्ण शिव
नहि प्रचलित ई होयत बात॥

कवि कोकिल रसखान मैथिलीक
विद्यापति कवि हरिपति जी

पंडित जतय : मंडन लखिमा
वीर हरि सिंह शिव सिंह जी ॥

उठू उठू आई युवक वृन्द
मिथिलाक मैथिली धरै चलू ।
सोर करू पछिलो पिछड़ल के
दय जान जान कय बढ़ै चलू ॥

❀ तिलक दहेज ❀

गाना न० २

सुनु ललिते मैथिल के ललने मिलि मिथिला उद्धार करू ।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू ॥

तिलक प्रथा थिक वृथा ग्लानि ई
लज्जा हमरा पाग के
नव पुष्प कें खोलि कली सँ
प्रकटित करू पराग के

करु मिथिले बिख्यात एकर मिलि प्रथा विरोध प्रचार करू ।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू ॥

रंग विरंग अंग रंग सँ
तरुण ललित ई देह में
ललित कपोल युगल कंचन कुच
उठल उरोज सँ गेह में

नव कली के देखि पराभव प्रकटित ललन पराग करू ।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू ।

जहि मिथिला कें मातृभूमि सँ
श्री जानकी बहिन एलीह
श्री लखिमा ठकुराइन गारगी
आदि रत्न के खान छली
मण्डन मिश्र विद्यापति चन्दा आदि रत्न कवि नाम धरू।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू॥
दया करू मिलि नव कुमारि पर
तोरि चलू ई नाग के
करू विरोध अन्याय प्रथा के
प्रफुलित करू ई बाग के
'रमण' बचन मृदु बोल विलक्षण मिलि मैथिल सस्मान करू।
तोरू तिलक दहेज प्रथा के ई लज्जा सँ पार करू॥

गाना नं० ३

(तर्ज—दिल लुटने वाला....)

चलु सुन्दरि ससरि शयन शशि सँ तरु प्रकटित पुष्प पराग करू।
सजलो नहि शयन सुहागिन सँ
मुख मीन मलीन की नीर बिना
पट घूँघट चीर उघारि लिय प्रियतम पति प्रीति सँ नेह करू।
चाँदो केर मुँह मलीन केने
किए गात एना सकुचीने छी
१ बाजि लिय बड़ राति भेलै उर मंडित प्रियतम हाथ करू।

विनु यौवन गात विना यौवन
सौं योजन प्रियतम दूर जेना
नयन मलिन और रैन विना चलू शयने संगम तीर करू।
नहि काज चन्नत तन लाज भेने
चुम्बक सन हृदय के कठोर केने
तुम्हने की "रमण" छिरिआय रहव ताम्बूल तवक शुभ दान करू।

गाना न० ४
(तर्ज—ये मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर····)

ई नोरक बुन्द स्याही सँ हृदय एक शुद्ध कागज पर
ई हम्मर हाथ सँ लिखल प्रथम मम आउ स्वागत पर
प्रतिष्ठा पायब नहि रुसने
फुलौने मुँह सासुर सँ
कुलिस निष्ठुर कठोरो कय हृदय पाथर बनौने छी
की सासुर पायब पुनि दोसर
अपन बहिनी सँ कयने छी
वसन्तिक डाढ़ि नव अंकुरित कियेक पतझार कयने छी
सुहागिन प्रेम घातक सँ
वरायब पाप के भागी
अमर सन्देश सिर सिन्दुर कमल कर सँ लगौने छी
ई सासुर शशि सरस सौरभ
कतय पुनि पायब शैली ई

तरुण रस पान नहि कयलथि तनिक फूटल अदृष्टे की
करू किछु ध्यान कखनो की
पधारू स्वर्ग सासूर कँ
"रमण' बचनो सुफल ओझा करू प्रकटित परागो की ।

गाना न० ५

(तर्ज—मानू मानू मानू ओझा···· —

सपथ दय लिखै छी ओझा मानू मोर बात यो ।
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो ॥
मलिन सरोज बिना रवि जल में
मलिन चकोर बिना शशि पल में
हमरो मलिन नित आहाँ बिनु गात यो ।
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो ॥
केहेन कठोर चित्त हृदय बनेलियै
पंकज जलबिनु भ्रामर केलियै
बेकल जेना हम आँधी बरसात यो
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो ।
दुरुखा सँ नित बाट तकै छी
सुनि घण्टी निज चौंकि उठै छी
काढ़ि कसीदा नित सीवि फुल पात यो ।
पढ़ितहि पत्र ओझा अयबै परात यो ॥
नहि होयत धन ससुर के देने

जौं नहि होयत अपन कमौने
"रमण" बचन मृदु मानू ओझा बात यो।
पढ़तहि पत्र ओझा अयबै परात यो॥

गाना न० ६

(तर्ज बार बार तुझे क्या समझाऊँ····

आजु हमर प्रियतम हे सजनी जयताह अपनो गाम,
पहु विनु सजनी लागे मोरा जीवन झमान
नाजुक कली सुखायल सजनी आजुक साँझक बेला
प्रेमक प्रीति बिछा पहुँ सजनी तीर बेधि चित गेला
सुनि ई चैन ने पाओल सजली हृदय में छलक वाण।
कापर करब शृ गार पिया नहि पाओत हे
कोना कय खेपव राति नींद नहि आओत हे
• आजु नहि किछु भावय सजनी लागय अपन विरान
ने सटबै हम आई सँ टिकुली काजर किनु नैन सुखेबै
फेकव अप्पन शृ गारक पेटी कापर सुभग सजेबै
तेलक विना सुखेबै केसो हमरो बात प्रमाण॥
करु शृंगार नान सँ देखव ज्ञान करू
मिलत कंत पहु सुन्दरि पुनि सतोष धरू
कहथि 'रमण" विचारि सोचि पुनि सुन्दरि करु ज्ञान॥

गाना न० ७

(तर्ज—दू घैला छौ हाथ में····)

दू चोटी लागल फूल छौ बयस तरुण अनुकूल ··।

मातलि पूर्ण पयोधरि कुच सँ, सम्पति अर्जल मूल छौ ॥
पायल के झनकार शब्द पर गनि गनि डेग चलैं छै गे ।
हस्थि गमन सम डेग डेग पर नूपुर संग गवै छै गे ॥
नयन विराजित जाल छौ, युवक बृन्द पर ख्याल छौ ।
सोलह सालक समय विता कय शैवन यौवन तूल छौ ॥
मधुर वसन्तक किसलय कोढ़ी तरुणी सदाय रहै छै गे
विकसित कलीक मधुर रस सं नित गुंजित भ्रमर पबै छै गे
अधर लाल मुँह गीर छौ केहन बनल तकदीर छौ ।
छाड़ि लाज नहि नेत्र तकै छै सकोचक निर्मूल छौ ॥
देहसि रूपक वर्णन कय कवि कोटि चन्द्र पल हारौ गे ।
चित मोहित पल कमल नयन ई तृण सम चुम्बक टारौ गे ॥
मस्त जवानीक जोर छौ नवीन चलित समतोर छौ ।
'रमण' सदा चित हृदय मिलित उर भ्रमन करैत भय धूल छौ ।